e-paper : www.dailynewsactivist.com लखनऊ, मंगलवार, 21 नवंबर 2017, मार्गशीर्ष मास शुक्ल पक्ष तृतीया, संवत् 2074 विक्रमी वर्ष-11, अंक-39, पृष्ठ-16, मूल्य- ₹ 2.00, नगर संस्करण
website : www.dnahindi.com
शब्द शब्द संघर्ष
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट
RNI NO.: UPHIN/2007/41982
डाक पंजीयन : एसएसपी/एल.डब्लू./एन.पी.-358/2016-18
संस्करण : लखनऊ ■ इलाहाबाद

14 कोहली का शतक, भारत-श्रीलंका टेस्ट रोमांचक स्थिति में ड्रा
8 शिक्षा अधिकार कानून के सात साल बाद
9 जहरीली हवा क्यों और कैसे आई
16 मुगाबे के खिलाफ चलेगा महाभियोग

जहरीली हवा क्यों और कैसे आई

● डॉ. भरत राज सिंह
brsinghlko@gmail.com

विगत वर्ष 2016 में 25-26 नवंबर को हिमाचल के नजदीक दिल्ली व हिमालय से सटे उत्तर प्रदेश के लखनऊ शहर में, शीतलहर व कोहरे के साथ-साथ हवा में जहरीले कणों की धुंध छाई हुई थी। इससे सांस लेना मुश्किल हो रहा था। उस समय मौसम वैज्ञानिकों का अनुमान उनके विश्लेषणों पर खरा नहीं उतर पा रहा था। पिछली दीवाली 30 अक्टूबर, 2016 को थी, उसके कुछ दिनों बाद, लगभग 10 दिनों तक कोहरा छंटने का नाम नहीं ले रहा था। जनता व पशु-पक्षी भी ठंड व कोहरे से उत्पन्न प्रदूषित वायु में उपलब्ध जहरीले कणों से बेहाल हो चुके थे, परंतु इसकी जानकारी नहीं थी कि इससे सांस लेने में दिक्कत क्यों हो रही है और इससे क्या-क्या दिक्कतें आगे आएंगी।

इस वर्ष भी दीपावली जो 19 अक्टूबर 2017 को थी, के बाद पंजाब व चंडीगढ़ में कटाई के उपरांत आसमान में धुंध हफ्ते भर छाई रही, इसका क्या कारण है, लोगों में तरह-तरह की भ्रांतियां पैदा हुईं। हवा में प्रदूषण का मुख्य कारण औद्योगिकीकरण की अंधाधुंध बढ़ोतरी व वाहनों की निरंतर मांग तथा उसके इंजन से उत्पन्न धुआं है, जो वाहनों के निकास पाइप से निरंतर निकलता रहता है तथा उसमें बढ़ोतरी होती रहती है। इस प्रकार आसमान में लगभग 10 से 20 किलोमीटर दूरी पर ग्रीन हाउस गैसों का अधिक से अधिक जमाव व विकिरण हुई सूरज की किरणों से धरती गरम हो रही है। इस पर वाहनों व औद्योगिकीकरण से निकलने वाले धुएं के क्वालिटी को रोकने के लिए जलवायु संरक्षण नीति लागू की गई है। जिससे

पार्टिकुलेट मैटर पीएम-2.5, 60 प्रति घनमीटर व पीएम-10, 100 प्रति घनमीटर तक रोकने हेतु तय किया गया है।

वर्ष 1952 में लंदन में एक सप्ताह धुंध के बादल छाने व वातावरण में सल्फर डाई ऑक्साइड की अधिक मात्रा से लगभग 4000 मौतें हुई थीं, वहीं अमेरिका में भी 1972 में आसमानी धुंध से लगभग 25 मौतें होने का पूर्व उदहारण मिलता है।

दीवाली के त्यौहार में उत्साह का प्रदर्शन करने वालों की होड़ में बड़े शहरों में क्रैकर्स, चटाई व धुएं देने वाले फुलझड़ी पर करोड़ों रुपए का वारा-न्यारा किया जाता है और हवा को जहरीला बनाया जाता है। इसका असर इतना गंभीर हो जाता है कि बारिश के मौसम के अंतिम दौर व शरद ऋतु आगमन के इस मोड़ पर रात में हवा में नमी आने से जलबिंदु भारी होकर ओस का रूप ले लेते हैं। वही जहरीले कण पुन: धरती के नजदीक जलबिंदुओं के दबाव में नीचे आ जाते हैं और सांस लेने में तकलीफ देने लगते हैं। इस प्रकार की धुएं की धुंध चारों तरफ इकट्ठा होकर पूरे वातावरण में पीएम-2.5 की मात्रा 485 प्रति घनमीटर व पीएम-10 की मात्रा 1700 प्रति घनमीटर तक पहुंचा देते हैं और कई जगह दिन-दिन भर धुंध के बादल बने रहने से जीवन के लिए घातक हो जाता ह। यह मात्रा 6 से 17 गुना बढ़ जाती है।

विगत दो वर्षों से, शीतकालीन मौसम प्रारंभ होते ही, हवा में प्रदूषण के कणों यानी पीएम-2.5 की मात्रा 485-536, जो 8.9 गुना सीमा से अधिक बढ़ जाता है, जो जानलेवा साबित होता है। लखनऊ व दिल्ली देश ही नहीं, वरन पूरे विश्व में सबसे अधिक प्रदूषित शहर की श्रेणी में आ जाते हैं, जो भी लोग सुबह-शाम घरों से बाहर निकलते हैं अथवा दिन में कार्यालय जाते हैं, उन सभी को सांस लेने में कठिनाई महसूस होती है। इसका मुख्य कारण, जो ग्रीन हाउस गैसों के प्रदूषित कण वायु मंडल में पहुचते हैं, वह फॉग व शीतलहर में, जब ओस की बूंदें बनती हैं तो उनके दबाव से प्रदूषित कण जमीन के सतह के पास आ जाते हैं। इससे हवा की क्वालिटी बहुत गिर जाती है और सांस लेते समय यह कण जो नैनो आकार व माप के होते हैं, श्वास नली के द्वारा मनुष्य व जीव-जंतुओं में भी फेफड़ों, हृदय की धमनियों व आंतों में पहुंचकर चिपक जाते हैं और बाद में बाहर न निकल पाने व शरीर के अंदरूनी दीवारों के रास्तों को भी संकरा कर देते हैं, जिससे तरह-तरह के रोगों जैसे- कैंसर, हृदय रोग, किडनी आदि के उत्पन्न होने का खतरा बढ़ता जा रहा है।

ऐसे समय कागज, पत्तों व कूड़ा-करकट जलाना नहीं चाहिए, अन्यथा हवाओं में जहरीले कणों की अधिक बढ़ोतरी होगी। सड़क व खुले स्थानों पर झाड़ू का उपयोग, पानी के छिड़काव के उपरांत करना चाहिए, जिससे वातावरण में डस्ट व धूल के कण न उड़ें, जो दमा आदि के मरीजों के लिए अधिक घातक होगा। धुंध का बादल, हवा के चलने व गर्म स्थान की तरफ टनल के रूप में आगे बढ़ने से धीरे-धीरे कम होगा।